पाठ 1

प्राचीन विश्व

पुरापाषाण काल में मानव ने पत्थर, लकड़ी और जानवरों की हड्डियों से हथियार और औजार बनाना सीखा । इस समय मानव गुफ़ाओं में रहते थे | अपने लिए खाने का प्रबन्ध जानवरों का शिकार करके या इधर-उधर से इकट्ठा करके करते थे । लगभग उसी समय पशुपालन भी शुरु कर दिया । आदिमानव ने अपने रहने के लिए ठिकाना भी ढूढ़ लिया । इसी कारण वह कृषि करने में भी सफल हो पाया । पाषाण युग के बाद धातु युग, कास्य युग और लौह युग आया था । इन युगों से मानव की एक ऐसी सभ्यता प्रारम्भ होती है जिसने मानव जीवन, उसके रहने सहने का ढंग, उसकी दैनिक जीवन की क्रियाओं को ही बदल डाला । कांस्य युगीन सभ्यताओं की मुख्य सभ्यताए थी | मेसोपोटामिया, मिस्त्र ,चीन और भारत लौह युगीन सभ्यताऐ थी ।

कांस्य युग :- तांबा पहली धातु थी, जिसका इस्तेमाल मानव ने किया । पत्थर और तांबा दोनों के इस्तेमाल पर आधारित संस्कृतियों को ताम्र पाषाण संस्कृति कहते हैं । कांसा जो तांबा और रांगा की मिश्र धातु है, इसकी खोज भी इसी युग में हुई । इसलिये इसे कांस्य युंग भी कहते हैं । इस काल में हथियारों और औजारों के निर्माण में तांबा और कांस्य ने एक हद तक पत्थर, लकड़ी और हड्डी की जगह ले ली । इसी काल में विभिन्न नदी घाटियों में पहली बार नगर आधारित सभ्यताओं का उदय हुआ । प्राचीन काल में लोगों ने महान सभ्यताओं का निर्माण कर मानवता को महत्वपूर्ण योगदान दिया | ये प्राचीन सभ्यताएँ मेसोपोटामिया, मिस्त्र, भारत व चीन में उभरी व विकसित हुई । अब हम इन सभ्यताओं के बारे में कुछ विस्तार से चर्चा करेंगे ।

मेसोपोटामिया की सभ्यता :- मेसोपोटामिया का शाब्दिक अर्थ है, नदियों के बीच की जमीन । यह दजला और फरात नदियों के बीच स्थित थी और आधुनिक नाम इराक हैं । इन नदियों में अक्सर बाढ़ आ जाया करती थी । इस प्रकिया में उनके किनारों पर ढेर सारी मिट्टी और गाद जमा हो जाती थी | यह किनारों के पास की जमीन को खूब उर्वरक बना देती इससे उपज बढ़ी । यहाँ के लोग भारत जैसे सुदुर क्षेत्रों के साथ जमीनी और समुंद्री दोनों तरह के नियमित व्यापार करते थे । उन्होंने लिखने की कला भी विकसित कर ली थी । उस समय की लिपि संकेत चिन्हों या चित्रों का समूह थी । बाद में वे फान जैसी लकीरे खीचते थे । यह लिपि कीलाक्षर कहलाती है । मेसोपोटामिया के प्राम्भिक शहर छोटे राज्यों के समान थे । उनका अपना प्रशासन वर्गों में पुरोहित, राजा और कुलीन शामिल थे । उनके अलावा सौदागर, आमलोग और गुलाम थे । यहाँ के लोग आकाश का देवता, हवा का देवता, सूर्य देवता, चन्द्रमा देवता, प्रजजन देवी, प्रेम की देवी और युद्ध का देवता की पूजा करते थे । हर शहर का एक संरक्षक देवता होता था । यहाँ अनेक खूबसुरत मंदिरों का निर्माण किसानों और गुलामों, जो ज्यादातर युद्ध - बंदी होते थे, उनसे करवाया गया ।

मिश्र सभ्यता :- मिश्र को अक्सर नील नदी का तोहफा कहते हैं, जो बिल्कुल सही हैं । हर साल नदी में बाढ़ आती और उसके किनारे जलमग्न हो जाते हैं । वहाँ पर गाद की एक मोटी परत जमा हो जाती, जो जमीन को बेहद उपजाऊ बना देती हैं । ईसा पूर्व 3100 तक मिश्र एक राजा के अधीन आ गया था । मिश्रवासी अपने राजा को भगवान मानते थे । मिश्री राजाओं को फराओ कहा जाता था । प्राचीन मिश्री लिपि को चित्रलिपि या चित्राक्षर कहते हैं । प्राचीन मिश्र वासियों को गणित की ख़ासकर रेखागणित की अच्छी जानकारी थी । उन्हें मापतोल की भी ख़ासी जानकारी थी | फ़राओ ने प्राचीन विश्व के महान स्मारक पिरामिड बनवाए । मिश्र वासी मौत के बाद जिन्दगी पर

यकीन करते थे । इसलिए उन्होंने शवों को संरक्षित रखा । इन संरक्षित शवों को ममी कहा जाता है । पिरामिड को मृत राजाओं के ममी किए गए शवों को रखने के लिए मकबरों के रूप में बनाया गया था ।

चीनी सभ्यता :- चीन सभ्यता उत्तरी चीन में ह्वांग नदी घाटी में फली-फूली । ऐतिहासिक साक्ष्यों के मुताबिक चीन शुरूआती शासन शांग शासन में लेखन शैली ईजाद की गई | इसके काल के दस्तकार, विशेषत: कास्य शिल्पी अपने काम में माहिर थे । चाऊ ने शांग वंश की सत्ता खत्म कर दी । लेकिन कोई भी चाऊ राजा इतना शक्तिशाली नही हुआ जो पूरे राज्य को अपने काबू में रख सके । चाऊ शासन के परवती काल में लोहे का इस्तेमाल होने लगा, जिसने कास्य युंग का समापन हो गया । ईसा पूर्व 221 में चीन राजा चीन के शासक बने । उन्होंने कुलीनों की ताकत कुचल डाली । चीन राजाओं ने साम्राज्य को अनेक प्रान्तों में बाँट दिया और हरेक के लिए एक - एक शासक नियुक्त कर दिये । उन्होंने चीन की मशहूर दीवार भी बनवाई । चीन वंश के बाद हाँन वंश आया । उसने 220 ईस्वी साल तक चीन पर राज्य किया । इस दौरान मध्य एशिया और फारस से गुजरने वाले प्रसिद्ध रेशम मार्ग की ओर से पश्चिम से चीनी सौदागरों का नियमित सम्बन्ध बना रहा । यहाँ के लोग पूर्वजों और प्रकृति - आत्माओं की पूजा करते थे । कनफ्यूशस नामक एक प्रसिद्ध चीनी धार्मिक उपदेशक ने सही व्यवहार प्रणाली का प्रचार-प्रसार किया । इसने चीनी समाज और सरकार को बेहद प्रभावित किया ।

भारत हड़प्पा सभ्यता :- भारत में कांस्य युगीन सभ्यता सिन्धु घाटी और इसके अगल-बगल के क्षेत्रों में विकसित की हुई । इसे सर्वाधिक महत्वपूर्ण शहरों में से एक शहर हड़प्पा के नाम से विकसित हुआ जिसे हड़प्पा सभ्यता कहते हैं । इसे विस्तृत सिन्धु घाटी सभ्यता भी कहा जाता है | इस सभ्यता के नगर 1920 के दशक में तब प्रकाश में आये जब पुरातत्वविदों ने वहां खुदाई की । अब तक हड़प्पा संस्कृती के सैकड़ों स्थलों का पता चल चुका है जिनमें सबसे महत्वपूर्ण हड़प्पा (पंजाब), मोहनजोदड़ो (सिंध), लोथल (गुजरात), कालीबंगा (राजस्थान), रोपड़ (पंजाब), बनवली (हरियाणा), धोलावीरा (गुजरात) आदि हैं ।

नगर योजना :- वे लोग सुनियोजित नगरों में रहते थे । हड़प्पाई शहरों की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी, मजबूत नगर दुर्ग की उपस्थिति | दुर्ग में सार्वजानिक इमारत होती थी | दुर्ग के नीचे नगर का दूसरा हिस्सा था यहा आम लोगों के मकान थे | नगरों में चौडी सड़कें थी | मकान ईट के बने थे हर घर में कुए, स्नान घर, नाली, और परनाली थी | यहाँ की सबसे प्रमुख विशेषता विशाल स्नान घर (180 फुट लम्बा और 108 फुट चौड़ा) था | हड़प्पा का विशाल अनाज भंडार एक महत्वपूर्ण इमारत थी |

समाज और अर्थव्यवस्था :- हड़प्पावासी कृषि, पशुपालन, दस्तकारी, व्यापार और वाणिज्य में माहिर थे । मुख्य फसले गेहूं, जौ, राई, तिल और मटर थी । लोथल और रंगपुर में धान मिले हैं । कालीबंगन में हल की लीक के निशान मिले हैं । सिचाई के कई तरीकों का इस्तेमाल करते थे । गाय, बकरी, भेड़, सांड, कुत्ते, बिल्ली, ऊंट, और गधे जैसे जानवरों को पालतू बनाया जा चुका था | लोग अनाज, मछली, मांस, दूध, अंडे और फल खाते थे | वाणिज्य और व्यापार भी महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधियों में शामिल थे | मेसोपोटामिया के साथ हड़प्पा वासियों के सम्बन्ध थे | वे सोना, रांगा, ताम्बा, जैसी धातुओं का और अनेक प्रकार के रत्नों का आयत करते थे | निर्यात में कृषि उत्पाद, सूती सामान, बर्तन, जेवरात, हाथी के दांत की बनी चीजें और दस्तकारी समान शामिल थे | हड़प्पा की मिट्टी की बनी मोहरों का इस्तेमाल संभवत: वाणिज्यक उद्देश्य था |

धर्म और संस्कृति :- मातृदेवियाँ हडप्पा वासियों के बीच बेहद लोकप्रिय प्रतीत होती हैं | मोहनजोदडो में एक पुरुष देवता भी मिला है | जिसे शिव (पशुपति) का आदि रूप कहा गया है | उसे एक मोहर पर पशुओं से घिरे योग की मुद्रा में बैठे दिखाया गया है | लिंग पूजा, वृक्ष और जडात्मकवाद भी प्रचलन में थे | विभिन्न स्थलों पर मिले ताबीज और जन्तर आत्माओं तथा उन पर उसके विश्वास की ओर इशारा करते हैं | वे एक लिपि का प्रयोग करते थे जिसे अभी तक नही समझा जा सका है |

पतन :- इतिहासकार मानते है कि आर्यों के आक्रमण ने हडप्पा सभ्यता को ख़त्म कर डाला लेकिन संदेहास्प्रद प्रतीत होता है | क्योंकि आर्यों के भारत आने से सदियों पहले इस सभ्यता का पतन हो गया था | प्राकृतिक आपदाएँ इस सभ्यता के पतन का सबसे महत्वपूर्ण कारण जान पड़ती है | कुछ की राय में मेसोपोटामिया से हो रहे समुंद्री व्यापार में गिरावट की भी इस सभ्यता के पतन में कुछ भूमिका रही होगी |

लौह युगीन समाज:- लौह युग का मतलब वह समय है जब लौहे का उत्पादन बड़े पैमाने पर शुरू हो गया और इसका इस्तमाल होने लगा | यह करीब 3000 साल पहले आरम्भ हुआ | इसने लोगों के सामाजिक और आर्थिक जीवन में व्यापक परिवर्तन ला दिए | लौहा, ताम्बा और कास्य में बहुत सस्ता और मजबूत था | लोहे के औजारों से कृषि उपज में ख़ासी वृद्धि हुई | लौहे के इस्तेमाल से परिवहन और संचार पर जबरदस्त प्रभाव पड़ा | व्यापार और वाणिज्य भी फला फूला | यह व्यापार खुशहाली लाया | नये हथियार भी इसी युग की देन है | लौह युग बौधिक प्रगति का भी दौर था | उस दौर का सर्वाधिक महत्वपूर्ण विकास वर्णमाला की शुरुवात था | इस से पुराने चित्र लिपि पर आधारित लिखावट की जगह ली | फिनिशियायियों ने 22 अक्षरों वाली वर्णमाला विकसित की, यह युग अधिक बड़े स्तर पर राज्यों की निर्माण का भी साक्षी है | जो सभ्यता लौह युग में फली वह देश थे - ग्रीस, रोम, पर्शिया, और भारत | यह सभ्यता पूर्व युग से कई ज्यादा विकसित है |

यूनानी सभ्यता :- यूनानी सभ्यता करीब 2000 साल पहले से कुछ समय बाद यूनान में विकसित हुई । नगर राज्यों का विकास यूनानी सभ्यता की एक अनूठी विशेषता है । हरेक नगर सुरक्षा के लिये दीवारों से घिरा होता था । नगर के अन्दर किसी पहाड़ी पर किला होता था, जिसे एकोपोलिये कहते थे । यूनानी नगर राज्यों में सबसे प्रसिद्ध एंथेस और स्पार्टा थे । एंथेस धनी और सुसंस्कृत था । एंथेस वासियों में लेखक, दार्शनिक, कलाकार और चिंतक शामिल थे । समाज गुलाम श्रम आधारित था लेकिन नागरिकों के लिए लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली थी । पूरे यूनान में स्पार्टा की सेना सबसे अच्छी थी । यहाँ युद्ध कौशल का प्रशिक्षण सर्वाधिक महत्वपूर्ण चीज माना जाता था । वहां पर कोई लोकतंत्र नही था । एंथेस और स्पार्टा में ख़ासी प्रतिस्पर्धा थी । पेरिक्लिज का दौर एंथेस के लिए स्वर्ण युग था । लेकिन एथेंस और स्पार्टा के बीच 27 साल तक चले पेलोपोनिशियाई युद्ध में एंथेस की हार हो गई । प्राचीन यूनानी कला, विज्ञान, साहित्य, और मूर्ति कला में अग्रणी थे । इसलिए महान यूनान को पश्चिमी सभ्यता की जन्म स्थली कहते हैं । सुकरात, अफलातून और अरस्तु आदि महान दार्शनिक थे । हेरोडोटस और मुसीडाईडीज, प्रसिद्ध इतिहासकार थे ।आर्कीमिडिज, एरिस्टार्क्स, और डेमोकिस्ट्स, महान वैज्ञानिक थे । यूनानियों को वास्तु कला में भी महारत हासिल थी । ईसा पूर्व 776 में शुरू हुए ओलंपिक खेल ओलम्पिया नामक जगह पर हर चार साल में आयोजित किये जाते थे । खेल और एथलेटिक्स देवताओं के राजा जियस के सम्मान में होते थे । यूनानी मानते थे कि उनके देवी- देवता ओलम्पस पर्वत पर वास करतें हैं । यूनानी नगर प्रशासन तथा सांस्कृतिक -आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र थे । एक समय में यूनानियों ने विशाल साम्राज्य भी खड़ा किया । मकदूनिया के सिकंदर ने जिसे इतिहास में सिकंदर महान के नाम से जाना जाता है । यूरोप के बहार जाकर सीरिया, मेसोपोटामिया, मिश्र,

अफगानिस्तान और यहाँ तक की मध्य एशिया तथा पूर्व - पश्चिमी भारत के हिस्सों को जीता । सिकन्दर 33 साल की छोटी सी उम्र में मर गया । बाद में रोमनवासियों ने यूनान पर कब्जा कर दिया ।

रोमन सभ्यता :- रोम नगर मध्य इटली में ताइबर नदी के तट पर बसा हैं । रोमवासियों ने एक गणराज्य की स्थापना की, रोमन गणराज्य का संचालन सीनेट करता था, जो बजुर्गो का एक समूह था । ईसापूर्व 200 तक रोम इटली की प्रमुख शक्ति बन चुका था । उसने भूमध्य सागरीय क्षेत्र के नियंत्रण के लिए कार्थेज जैसे प्रतिद्वदी को परास्त कर दिया था । पूर्व-रोमन समाज में तीन वर्ग थे - पैट्रीशियन (कुलीन), प्लीबियन (आमजन) और गुलाम । रोमन अर्थव्यवस्था गुलाम - श्रम पर आधारित थी । इन गुलामों को अक्सर ग्लेडीएटर युद्ध के लिए प्रशिक्षण दिया जाता था । जो गुलामों व जंगली जानवरों के बीच लड़ा जाता था । रोम में अनेक गुलाम विद्रोह हुए । उनमें से एक का नेतृत्व स्पाट्कस (74 ईसा पूर्व) ने किया था । रोमन साम्राज्य तीन महाद्वीपों - यूरोप, एशिया और अफ्रीका में फैला था । आगस्टस के शासन काल में महान पैगम्बर ईसा मसीह का जन्म बेथलेहम में हुआ । जब रोमन साम्राज्य अपने शिखर पर था तो वह पूर्व में मेसोपोटामिया से लेकर पश्चिम में गॉल और ब्रिटेन तक फैला था । ग्रामीण इलाकों में रोमवासियों ने विशाल और आरामदेह फार्महॉउस बनवाये | जो विला कहलाते थे । पूरे साम्राज्य में लोग रोमन जीवन शैली अपनाते थे । ग्लेडीएटीं की लड़ाई, रथों की दौड़ और थिएटर आम मनोरंजन थे । रोम का साम्राज्य सम्राट की इच्छा पर चलता था । लेकिन उसकी ताकत का दारोमदार सेना पर था । वर्ष 395 ईस्वी तक बेहतर प्रशासन के लिए विशाल रोमन साम्राज्य को दो हिस्सों में बांट दिया गया । साम्राज्य का पूर्व हिस्सा (राजधानी बाईजेटीयम) बर्बर हमलों (476 ईस्वी) के चलते पश्चिमी भाग के पतन के बाद भी बना रहा ।

ईरानी सभ्यता :- लौह युग में फारस (आधुनिक ईराक) में आर्य कबीले में रहते थे । मिडिज नामक उनकी एक शाखा देश के पश्चिमी हिस्से में रहती थी । दूसरी शाखा दक्षिणी - पूर्वी हिस्से में रहती थी और फ़ारसी कहलाती थी । मिडिज ने एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना की | जिसमें इरान का विशाल इलाका शामिल था । पहले फारसियों को भी उनका प्रभुत्व स्वीकार करना पड़ा | पारसी राजाओं में से एक साईरस ने 550 ईसा पूर्व में पारसियों को एकताबद्ध किया और मिडिज को पराजित कर एकेमेनी साम्राज्य की स्थापना की । दारा प्रथम ईरान का महानतम सम्राट था । उसका साम्राज्य सिन्धु नदी से लेकर भूमध्य सागर के पूर्व छोर तक फैला था । उसने पर्सेपोलिए को अपनी राजधानी (518 ई. पूर्व) बनाया । एकेमेनी वंश के इस सम्राट के शासन काल में ईरानी कला, वास्तु कला और मूर्ति कला का विकास हुआ । फ़ारसी योग्य प्रशासक थे । हिन्द आर्यो की तरह फ़ारसी पहले प्रकृति की शक्तियों की पूजा करते थे । वे सूर्य देवता, आकाश देवता और कुछ अन्य देवताओं को मानते थे । वे आग को पवित्रता का प्रतीक मानते थे । वे आग से जुड़े कर्म कांड करते और पशुओं की बलि दिया करते थे । बाद में एक धार्मिक उपदेशक जरुथुस्थ ने उन्हें सिखाया कि तमाम देवताओं के उपर अहुर-मज्द हैं | वह स्वर्ग और प्रकाश का मालिक है जो लोगों को ताकत और ऊर्जा देता है । पारसियों का पवित्र ग्रन्थ जेंद अवेस्ता कहलाता है ।

भारत वैदिक काल :- प्राचीन भारतीय इतिहास में एक नये चरण की शुरुआत वैदिक युंग से होती हैं । जिसका आरम्भ करीब 1500 ईसापूर्व भारत में आर्यो का आवागमन से हुआ । जिस दौरान कई आर्थिक, सामाजिक, और धार्मिक परिवर्तन हुए । इसलिए वैदिक युंग को बराबर अवधि के दो कालों में विभाजित किया जाता हैं । पूर्व वैदिक और उत्तर वैदिक काल पूर्व वैदिक काल की जानकारी मुख्यत: ऋग्वेद से मिलती है जो प्रथम वेद हैं । पूर्व वैदिक लोग प्राय : घुमन्तु जीवन व्यतीत करते थे । उनकी अर्थव्यवस्था मुख्यतः पशुपालन पर आधारित थी । मवेशी पालन आजीविका का मुख्य साधन था, किन्तु घोड़ों, बकरियों, और भेड़ों का भी महत्व था । थोड़ी बहुत खेती भी की जाती

थी । कबीले का मुखिया राजा कहलाता था और देवी - देवताओं की पूजा की जाती थी, जिसमें इन्द्र सबसे प्रमुख था । उत्तर वैदिक काल के बारे में अधिक विस्तार से जानते हैं, जिसके लिये हमारे स्त्रोत हैं विशाल उत्तर वैदिक साहित्य और प्रचुर पुरातात्विक सामग्री । उत्तर वैदिक साहित्य में शामिल है | बाकी के तीनों वेद सामवेद, यजुर्वेद, और अर्थवर्वेद हैं । इस काल की ढेर सारी जगहों की भी खुदाई हुई हैं । हर जगह एक ख़ास किस्म के मृदभाण्ड मिले हैं, जिन्हें चित्रित धूसर मृदभाण्ड (अग्रेजी में painted grey ware) कहते हैं । इस काल के अन्त में पूर्व दिशा में और आगे तीन राज्यों की स्थापना की गई । कांशी, कोसल और विदेह । खेती बाड़ी अब प्रधान कार्य था । लोग अब गावों में स्थिर जीवन व्यतीत कर रहे थे । जाति - प्रथा उभर कर चार वर्णों का रूप लेने लगी थी । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र । यज्ञ अब बड़े विस्तृत हो चले थे, इन्द्र देवता का महत्व कम हो गया था और नए देवता, जैसे कि प्रजापति, अब मुख्य हो गए थे । इस काल के अन्त में यज्ञो के कर्म - कांड के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया भी देखी जा सकती है ।

वैदिकोत्तर युंग :- छठी सदी ईसा पूर्व में उत्तर और पूर्व भारत में बड़े राज्य उभरे जिन्हें महाजनपद कहते हैं । इस तरह के 16 राज्य थे - अंग, मगध, वज्जी, काशी, कोसल, मल्ल, कुरु, पंचाल, वत्स, अवंति, कम्बोज, गंधार, अस्मक, चेदी, मत्स्य और शूरसेन । छठी शताब्दी ईसा पूर्व समाजिक - धार्मिक रुपान्तरण का भी एक दौर था । लोगों ने कर्मकांडी ब्राह्मणवाद और वैदिक बलि प्रथा के खिलाफ अपना असंतोष व्यक्त किया । अनेक पंथ उभर कर सामने आए । इनमें जैन और बौद्ध प्रमुख हैं । बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध का जन्म 563 ईस्वी. में लुंबिनी में हुआ । वह कपिल वस्तु के शाक्य क्षेत्रीय राजा शुद्धोधन के पुत्र थे । बोधगया में पीपल के पेड़ के नीचे बोधिसत्व ज्ञान प्राप्त हुआ । उन्होंने अपना पहला उपदेश वारावणसी के निकट सारनाथ में दिया । 80 साल की उम्र में (483 ईस्वी.) उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में उनको निर्वाण प्राप्त हुआ । ऋषभनाथ जैन धर्म के संस्थापक के रूप में मानें जाते हैं । वर्धमान महावीर इस पंथ के 24 वें तीर्थकर थे । महावीर का जन्म वैशाली (बिहार) के निकट कुंडा ग्राम में 540 ईस्वी में हुआ था । उन्होंने 42 साल की उम्र में कैवल्यं प्राप्ति उनकें अनुयायी जैन कहलाये हैं । बौद्ध धर्म की तरह यह कर्मकांड और वैदिक ब्राह्मणवाद का विरोध करता है । यह जाति व्यवस्था का भी विरोध करता हैं । और कर्म के सिद्धांत तथा पुनःजन्म को स्वीकार करता हैं ।

मौर्य काल :- नंद वंश के अंतिम राजा को चन्द्रगुप्त मौर्य ने 322 ईस्वी में परास्त कर मोर्य साम्राज्य की स्थापना की | विजय और विलय की सतत प्रकिया से वह लगभग सम्पूर्ण भारत को एकताबंध करने में कामयाब रहा । चन्द्रगुप्त ने 297 ईस्वी पूर्व तक राज किया । भद्रबाहू से प्रभावित होकर उसने जैन धर्म स्वीकार कर लिया । चन्द्रगुप्त को चाणक्य ने प्रशिक्षण दिया था । जिन्हें कौटिल्य के नाम से भी जाना जाता हैं । कौटिल्य ने अर्थशास्त्र की रचना की थी । चन्द्रगुप्त का पुत्र बिन्दुसार अमित्रघाट के नाम से भी जाना जाता हैं । इसने (297 ई.पू.से 272 ई.पू) तक शासन किया । उसने दक्कन जीत कर मौर्य साम्राज्य को मैसूर तक पहुचा दिया । बिन्दुसार की मौत के बाद उसके बेटों के बीच में सत्ता संघर्ष हुआ । उत्तराधिकारी के इस युद्ध अशोक (272 से 236 ई.पूर्व) विजयी होकर मंग्ध का शासक बना रहा । इसके शासन काल में महत्वपूर्ण घटना 260 ईसा पूर्व में हुआ कलिंग का युद्ध हैं । पत्थरों पर खुदवाये अशोक के 13 वें आदेश में इसका जिक्र किया गया हैं । बाद में अशोक ने बौद्धधर्म स्वीकार कर लिया और युद्ध का परित्याग कर दिया । वह एक परोपकारी राजा था । धम्म की उसकी नीति धार्मिक सहिष्णुता, बड़ो की इज्जत, बूढों की देखभाल करना, दया, सत्य और शुद्धता पर आधरित थी । उसके प्रयासों से बौद्ध धर्म भारत की सरहदों के पार भी फैला । उसके महत्वकांक्षी जनरल पुष्पमित्र शुंग ने 184 ईसा. पूर्व में उसकी हत्या कर डाली ।

संगम युंग :-(300 ई.पू.200 ईसवीं) संगम युग से दक्षिणी भारत में एक एतिहासिक दौर की शरुआत हुई | संगम का अर्थ था विद्वानों और साहित्यकारों का जमा होना ।मुदुरै के पांड्या राजाओं के शाही संरक्षण में साहित्यिक हस्तियों का जमावड़ा हुआ | जो 'संगम' के नाम से जाना गया ।मोटे तौर पर संगम युग 300 ईस्वी तक फैला हैं । संगम साहित्य में प्राथमिक रूप से पाण्ड्य राजाओं की चर्चा है, लेकिन उसमें चोल और चेर शासन की भी महत्वपूर्ण सूचनाएं मिलती हैं ।

कुषाण युग :- कुषाण मध्य एशिया के यूए कबीला की एक शाखा थे ।कुषाण का पहला शासक कुजुला कद्फिसिज था ।उसके बाद विमा कद्फिसिज आया विमा के बाद कनिष्क राजा बना ।कुषाण वंश का महानतम राजा कनिष्क था ।कनिष्क एक पक्का बौद्ध था ।उसके प्रयासों से बौद्ध धर्म चीन, मध्य एशिया और अन्य देशों में फैला ।वह कला और शिक्षा का महान संरक्षक था ।पुरुषपुर या पेशावर उसकी राजधनी थी ।वासुदेव कुषाण वंश का अंतिम महान राजा था ।उसके मरते ही कुषाण साम्राज्य का पतन हो गया ।

गुप्त काल :- (319 ईसवीं 550 ईसवीं) चौथी शताब्दी में गुप्त वंश का उदय भारतीय इतिहास में एक नये युग की शुरुआत गुप्त राजाओं को रेखांकित करता हैं ।चीनी यात्री फाह्यान के अनुसार इस काल में बहुत खुशहाली थी । महाराजा श्री गुप्त को गुप्त वंश का संस्थापक बताया जाता हैं, चन्द्रगुप्त था, जिसने महाराजाधिराज की पदवी अपनाई वह पहला प्रसिद्ध गुप्त राजा था ।उसका बेटा और उत्तराधिकारी समुन्द्र गुप्त (335 -380 ई.) बड़ा पराक्रमी था ।वह एक महान विजेता और शासक होने के साथ ही समुन्द्र गुप्त विद्वान और उच्च स्तर का कवि, कला और विधा का संरक्षक तथा संगीतज्ञ था ।उसने अश्वमेघ यज्ञ करवाया ।समुन्द्र गुप्त के बाद चन्द्रगुप्त द्वितीय (380 - 415) उसका उत्तराधिकारी बना ।उसने विक्रमादित्य की उपाधि अपनाई ।उसका उत्तराधिकारी उसका बेटा कुमारगुप्त प्रथम बना | उसके शासन काल में शांति और खुशहाली थी ।उसका उत्तराधिकारी उसका बेटा स्कंदगुप्त बना ।उसने कई बार हुण आक्रमण विफ़ल किये | उसके बाद धीरे-धीरे गुप्त साम्राज्य का पतन हो गया । गुप्त काल के दौरान राजतन्त्र प्रशासन की प्रमुख प्रणाली थी ।गुप्तों के पास शक्तिशाली सेना थी ।प्रान्तों का प्रशासन गवर्नर करते थे ।गुप्त राजाओं ने न्यायिक और राजस्व प्रशासन की एक प्रभावी प्रणाली भी विकसित की थी ।

गुप्तोतर काल :- गुप्त साम्राज्य का पतग और थानेश्वर के महाराजा हर्षवर्धन के उदय के बीच के काल को भ्रम और विखंडन का दौर माना जाता हैं ।इस समय भारत अनेक छोटे राज्यों में विखंडित हो गया था ।उस समय पुल्केशियन दूसरा (609-642) उत्तर भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली राजा था ।हर्षवर्धन ने फिर से साम्राज्य स्थापित करने का प्रयास किया ।वह सकलोचर पथनाथ कहलाता था ,क्योंकि उसने समूचे उत्तर भारत पर अपना राज्य स्थापित कर रखा था ।इस काल में भारत की राजनितिक एकता कुछ हद तक बहाल हुई ।हर्ष ने कांदबरी और हर्ष चरित के लेखक बाण भट्ट को संरक्षण दिया ।चीनी यात्री 'ह्वेनसांग' ने उसके शासन काल में भारत की यात्रा की थी ।इतिहास के इस काल में ब्राह्मणवादी हिन्दू धर्म ने द्धढता पाई ।वैष्णव, शैव और जैन मत का भी प्रचलन था ।

भारतीय सभ्यता एक नजर में : विश्व के इतिहास में भारतीय सभ्यता की एक महत्वपूर्ण जगह हैं ।प्रारम्भिक यूनान और रोम की तरह भारत में भी लोकतान्त्रिक और गणराज्य शासन प्रणाली रही है ।गणित, खगोलशास्त्र, रसायनशास्त्र, धातु कर्म और चिकित्सा में भारत का उल्लेखनीय योगदान हैं ।आर्यभट्ट और वराहमिहिर, प्रसिद्ध गणितज्ञ और खगोलशास्त्री थे ।चरक और सुश्रुत महान चिकित्सक थे ।नागार्जुन प्रसिद्ध रसायनशास्त्री थे ।शून्य

और दशमलव की प्रणाली की संकल्पनाऐ पहले भारत में विकसित हुई । प्राचीन भारतीयों ने कला, वास्तुकला, चित्रकला और मूर्ति कला में जबरदस्त महारत दिखाई । प्राचीन भारतीयों में नालंदा, तक्षशिला, विक्रम शिला, बलभी, कांशी जैसे ज्ञान के केंद्र थे । जहां भारतीय व विदेशी छात्रों को शिक्षा दी जाती थी । प्राचीन भारत में साहित्यक की अनेक महान कृतियाँ सृजित की गई थी । ऋग्वेद हिन्दू -यूरोपीय साहित्य की प्राचीनतम बानगी हैं । वेद, सूत्र, महाकाव्य, स्मृति, त्रिपटीका, जैन, आगम और अन्य धार्मिक ग्रन्थ प्राचीन भारत में सृजित हुए । कालिदास, बांणभट्ट सैन, विशाख्दंत, भास, और शुद्रक जैसी महान साहित्यक हस्तियाँ इसी काल की हैं । संस्कृत, पाली, प्राकृत साहित्य ने प्राचीन भारत में जबरदस्त प्रगति की ।